Volume-08
Issue-12
December-2021

ISSN: 2349-7637 (Online)
RESEARCH HUB International Multidisciplinary Research Journal
https://rhimrj.co.in/ [Peer-Reviewed Journal]
https://doi.org/10.53573/rhimrj.2021.v08i12.014

महाराष्ट्र तथा आन्ध्र प्रदेश के बौद्ध कला केन्द्र

डॉ. शोभाराम दुबे

सहायक आचार्य, संस्कृत विभाग, बी. एस. एजूकेशनल कन्या महाविद्यालय, सीतापुर

ARTICLE DETAILS

Article History
Published Online: 15 December 2021

Keywords
अमरावती, नागार्जुनीकोण्डा, अजन्ता, एलोरा, कार्ले, भाजा।

Corresponding Email:
dr.dubey80@gmail.com

ABSTRACT

महात्मा बुद्ध ने नेपाल स्थित लुम्बिनी में जन्म लेकर उत्तर प्रदेश तथा बिहार में बौद्ध धर्म का प्रचार प्रसार किया। स्तूप, चैत्य तथा बिहार के रूप में बौद्ध स्थापत्य के अवशेष बौद्ध कला केन्द्रों के रूप में भारत वर्ष के उत्तर प्रदेश, मध्य प्रदेश, बिहार, महाराष्ट्र तथा आन्ध्रप्रदेश राज्यों में फैले हुए हैं। दक्षिण भारतीय बौद्ध कला केन्द्रों में आन्ध्र प्रदेश के गुन्टूर जिले में स्थित अमरावती तथा नागार्जुनीकोण्डा विशेष महत्व रखते हैं। महाराष्ट्र के बौद्ध कला केन्द्रों में अजन्ता, एलोरा, कार्ले और भाजा प्रमुख हैं।

यद्यपि भगवान बुद्ध की जन्मस्थली नेपाल के लुम्बिनी में थी और लीलास्थली उत्तर प्रदेश तथा बिहार रही है तथापि दक्षिण भारत में महाराष्ट्र तथा आन्ध्र प्रदेश के बौद्ध कला केन्द्र भी दर्शनीय हैं। महाराष्ट्र के बौद्ध कला केन्द्रों में अजन्ता, एलोरा, कार्ले और भाजा प्रमुख हैं। जो इस प्रकार है :–

(1) अजन्ता :–

महाराष्ट्र के औरंगाबाद जनपद में $20^0 32'$ उत्तरी अक्षांश तथा 75^0 45′ पूर्वी देशान्तर पर अजन्ता नामक बौद्धकला केन्द्र स्थित है।[1] अजन्ता का प्राचीन नाम तो ज्ञात नहीं है, परन्तु महामायूरी नामक बौद्धग्रन्थ में अजितंजय नामक एक ग्राम का नामोल्लेख मिलता है, जिसका अधिष्ठाता यक्षमूट दण्ड था।[2] अजित भावी बुद्ध मैत्रेय का बोधिप्राप्ति के पूर्व का नाम है। अतः यह अनुमान किया जाता है कि, अजन्ता का प्राचीन नाम अजितंजय रहा होगा। जिससे वर्तमान लोक प्रचलित नाम अजिष्ठा अथवा अजन्ता निकला।[3] जिस प्रदेश में अजन्ता स्थित था उसका नाम अश्मक था। जिसका प्राचीनतम उल्लेख अष्टाध्यायी में मिलता है।[4] बौद्ध ग्रन्थ अंगुत्तर निकाय में इस प्रदेश का नाम, अस्सक मिलता है।[5] इन शैल गृहों का निर्माण बौद्ध भिक्षुओं के वर्षाकाल चार महीनों में अवास और उपासना के लिए आवश्यक व्यवस्था करना था।[6] बाघोरा नदी की उपत्यका में स्थित एक विस्तृत पहाड़ीमें 29 गुफाएं काटकर बनाई गई है।[7] इसमें से 5 गुफाएं (9,10,19,26,29) चैत्य गृह है शेष बिहार है।[8] इन गुफाओं की खोज 1819 ई9 में ब्रिटिश सेना की मद्रास रेजीमेन्ट के एक सैनिक अधिकारी जॉन स्मिथ ने इसे खोजा था। इसकी गुफा सं0 10 के 13वें स्तम्भ पर अंग्रेजी भाषा में लिखा है :–"John Smith 28th cavalry 28 April 1819"[9]

गुफा सं0 9 का चैत्य गृह हीनयान सम्प्रदाय का चैत्य गृह है। इस गुफा का गृहमुख 12′ ऊँचे चैत्य वातायन से मुक्त है। गुफा सं0 10 के चैत्य पूर्ववर्ती गुफा के समान है। यह गुफा अजन्ता की गुफाओं में सबसे प्राचीन है।[10] गुफा सं0 19 का चैत्य गृह महायान कालीन चैत्य गृहों का श्रेष्ठतम उदाहरण है।[11] गुफा सं0–26 का चैत्य गुफा सं0 19 के चैत्य की तुलना में बड़ा है।[12] गुफा सं0 28 का चैत्य गृह चैत्य का आरम्भ मात्र है।[13]

(2)एलोरा :–

महाराष्ट्र के औरंगाबाद जिले में 20^0 01′ 35′′ उत्तरी अक्षांश तथा 75^0 10′ 45′′ पूर्वी देशान्तर पर ऐलोरा की गुफाएं स्थित है। यहाँ पर 34 गुफाएं है, जिनमें गुफा सं0 01–12 बौद्ध गुफाएं, 13–19 हिन्दू गुफाएं तथा 30–34 जैन गुफाएं है।[14] यहाँ की बौद्ध गुफाएं 550–750 ई0 के मध्य निर्मित हुई है। यहाँ की गुहा सं0 10 में चैत्य गृह के रूप में निर्मित ''विश्वकर्मा गुहा मन्दिर ''सर्वश्रेष्ठ है। भिक्षुओं के निवास के लिए बनी हुई गुफाओं में गुफा सं0 2,5,8,11,12 मुख्य हैं।[15] कहा जाता है कि, ऐलोरा को इलिचिपुर के राजा यदु ने 8वीं शती ई0 में बसाया

[1] देवला मिश्रा– बुद्धिस्ट मान्यूमेंट, पृ0 175
[2] जनरल ऑफ दि यू0पी0 हिस्टारिकल सोसाइटी, खण्ड–15, पृ0 27
[3] एम0एन0 देशपाण्डे–अजन्ता म्यूरल्स, पृ0 15
[4] अष्टाध्यायी– 4, 1, 171
[5] अंगुत्तर निकाय– IV , 252
[6] अजय मित्र शास्त्री –अजन्ता, पृ0 2
[7] विजयेन्द्र कुमार माथुर– वही, पृ012
[8] अजय मित्र शास्त्री –अजन्ता, पृ0 46–63
[9] वही, पृ0 50
[10] वही, पृ0 50 52–53
[11] वही, पृ0 58–59
[12] वही, पृ0 61–62
[13] वही, पृ0 63
[14] राज किशोर सिंह–वही, पृ036
[15] विजयेन्द्र कुमार माथुर– वही, पृ0 81

था।[16] महाभारत[17] के अनुसार यह प्राचीन इल्वलपुर है, यहीं पर अगस्त ऋषि ने इल्वल दैत्य को मारा था। गुफा सं0 1, सादा विहार है। गुफा सं0–2 में श्रावस्ती के चमत्कार का अंकन है। गुफा सं0 –3 में बुद्ध प्रतिमा है। गुफा सं0–10 में बैठी हुई बुद्ध प्रतिमा बनी है। इसके अतिरिक्त इस गुफा में मंजुश्री लोकेश्वर, आम्र श्रावस्ती, महामायूरी, मैत्रेय, तारा और भृकुटि आदि का अंकन है।[18] गुफा सं0 11 दो तल कही जाती है यहां के भूमिक तल में बुद्ध की भूमिस्पर्श मुद्रा में मूर्ति है। इस मूर्ति के साथ पद्मपाणि और वज्रपाणि का अंकन है।[19] गुफा सं0 12 तीन तल युक्त गुफा है। इसमें बुद्ध और बोधिसत्वों का अंकन है।[20]

(3) कार्ले :–

महाराष्ट्र के पुणे नगर में 18°9′15′′ उत्तरी अक्षांश तथा 72°59′ 47′′ पूर्वी देशान्तर पर प्रसिद्ध कार्ले की बौद्ध गुफाएँ हैं। कार्ले की गुफाएँ दूसरी शताब्दी ई0पू0 से पाँचवी शताब्दी ई0पू0 के मध्य की है।[21] यहाँ पर पहाड़ी में कटी हुई गुफा के भीतर दूसरी शती ई0पू0 की प्रसिद्ध बौद्ध चैत्यशाला है। जो बौद्ध चैत्यों में सर्वाधिक विशाल एवं भव्य है। इस शैलकृत गुहा के स्तम्भ धरातल पर पूर्णरूपेण लम्ब है।[22] फर्ग्युसन के मत में चैत्य निर्माण कला की दृष्टि से कार्ले चैत्य सभी चैत्यों से अधिक सुन्दर है। भीतरी शाला की लम्बाई 124′ 3′′, चौड़ाई 45′ 6′′ तथा ऊँचाई 45′ है।[23] कार्ले की गुफाएं बौद्ध धर्म की महासांघिक शाखा के साथ सम्बद्ध है।[24] चैत्य शब्द चित्य में अण प्रत्यय लगाने से बनता है जिसका अभिप्राय पूजा स्थान से है। बौद्ध कला से चैत्य का गहरा सम्बन्ध है परन्तु पूर्ववर्ती काल में भी चैत्य शब्द देवायतन के साथ प्रयुक्त है।[25] रामायण में उल्लेख है कि भरत जिस समय अयोध्या वापस लौट रहे थे, उस समय उन्हें चैत्यों और देवायतनों में बने घोंसलों में पक्षीगण दिखाई पड़े थे।[26] दिवंगत महापुरुषों या राजाओं की स्मृति में चैत्य नामक स्मारक बनाए जाते थे। पर्वत को काट कर घोड़वाल के आकार का चैत्य तैयार किया जाता था। ऊपर पर्वत को अर्द्ध गोलाकार खोदा जाता था और घुड़नाल की गोलाई के चाप पर स्तूप तैयार किया जाता था। इसके कारण गुहा चैत्य मण्डप पुकारी जाने लगी।[27] कार्ले चैत्य की गैलरी और हाल के बीच में अष्टकोणीय 37 स्तम्भ हैं। 15 स्तम्भ हाल के दोनों ओर अंग्रेजी के यू आकार में है। जिनके शीर्ष भाग पर घुटने टेके हुए हाथी तथा सिंह और सवारों का अंकन है। कार्ले चैत्य के गुम्बद के नीचे स्तूप बना है।[28]

भाजा :–

महाराष्ट्र के पुणे जिले में भाजा नामक स्थान पर चट्टानों को काटकर बनाई गई गुफाओं का समूह 18°43′उत्तरी अक्षांश तथा 73°28″ पूर्वी देशान्तर पर स्थित है।[29] भाजा बौद्ध कालीन गुहा मन्दिरों के लिए प्रसिद्ध है। यहाँ 18 गुफाएँ है। इनके बीच में 17′ लम्बी चौड़ी चैत्यशाला है। सामने बरामदा और आठ प्रकोष्ठ है जो भिक्षुओं के रहने के काम में आते थे।[30] गुहा में स्तूप की सरल खुदाई से वह स्थान चैत्य कहलाने लगा। भाजा में ऐसी ही स्तूप गुहाओं में स्थित है।[31] स्तूप के ऊपर सामान्यतः तीन छत्र तीन भुवन का प्रतीक है, सात छत्र सात भुवन का प्रतीक है। भाजा में चौदह छत्रों का अंकन मिलता है। जो 14 भवनों का प्रतीक है।[32] भाजा की गुफाएँ जिन कलाकारो ने खोदी थी, वे लकड़ी के घरों में रहते थे अतः उन लोगों ने लकड़ी की शहतीर का सहारा लिया, जो भाजा के चैत्य मण्डपों के मेहराब द्वारा भी छतों में देखा जा सकता है।[33] शुंग काल में हीनयान धार्मिक परम्परा के अनुसार भाजा की गुफाएँ बौद्ध भिक्षुओं के निवास के लिए बनवाई गई।[34] भाजा के चैत्य द्वार के सामने के माथे को सुन्दर सुन्दर बनाने के लिए चैत्य वातायननुमा आकार में बनाए गए तथा समीप ही विहार खोदा गया।[35] भाजा के स्तूप सादे तथा बुद्धमूर्ति रहित होने के कारण हीनयान काल के प्रतीत होते हैं।[36] भाजा के चैत्य मण्डपों घोड़े की नाल की बाहरी भाग में तीन दरवाजे हैं। मध्य दरवाजा नाभि में प्रवेश करता है। दाएँ दरवाजे से उपासक प्रवेश कर गलियारे में घूमकर अर्थात स्तूप की प्रदक्षिणा करके विपरीत दिशा के गलियारे से बाहर निकल आता है। नाभि भाग में भिक्षुगण जा सकते थे और स्तूप को स्पर्श भी कर सकते थे।[37] भाजा की गुफाओं में मूर्तिकला के उदाहरण बहुत कम हैं। इसकी भित्तियों पर पाँच मानवाकृतियाँ उत्कीर्ण है, जिनके नीचे दानवों की प्रतिमाएँ बनी है। दूसरी मूर्ति सम्भवतः गजारूढ़ देवेन्द्र की है। यह गुहा बिहार सम्भवतः सूर्य उपासकों द्वारा निर्मित जान पड़ता है। भाजा की पहाड़ी पर लोहगढ़ तथा ईशापुरी के प्राचीन दुर्ग हैं।[38]

महाराष्ट्र राज्य के बौद्ध कला केन्द्रों पर विचार विमर्श करने के उपरान्त अन्तिम चरण में आन्ध्र प्रदेश के बौद्ध कला केन्द्रों पर संक्षिप्त चर्चा इस प्रकार है। दक्षिण भारतीय बौद्ध

16 वही, पृ0 82
17 महाभारत, वन पर्व, 99
18 देवला मिश्रा– वही पृ0 187
19 वही पृ0 186
20 देवला मिश्रा– वही पृ0 187
21 एशियन आर्ट एण्ड आर्किटेक्चर : आर्ट एण्ड डिजाइन, पृ0 382
22 विजयेन्द्र कुमार माथुर– वही, पृ0 175
23 याकूब हसन–रेम्पेल चर्चेज एण्ड मास्क्स पृ0 48
24 नलिनाक्ष दत्त–बुद्धिस्ट सेक्ट्स इन इण्डिया, पृ0 62
25 वासुदेव उपाध्याय–वही, पृ0 104
26 रामायण– 2, 71, 42
27 वासुदेव उपाध्याय–वही, पृ0 105
28 राज किशोर सिंह–वही, पृ0 23
29 जेम्स बर्गेस– द केब टेम्पल्स आफ इण्डियाख पृ0 223
30 विजयेन्द्र कुमार माथुर– वही, पृ0 664
31 वासुदेव उपाध्याय–वही, पृ0 12
32 वही, पृ0 19
33 वही, पृ0 139
34 वही, पृ0 143
35 वही, पृ0 145
36 वही, पृ0 151
37 वही, पृ0 164
38 विजयेन्द्र कुमार माथुर– वही, पृ0 664

कला केन्द्रों में आन्ध्र प्रदेश के गुन्टूर जिले में स्थित अमरावती तथा नागार्जुनीकोण्डा विशेष महत्व रखते हैं, जिनका संक्षिप्त विवरण इस प्रकार है :–

अमरावती :–

प्रसिद्ध बौद्ध कला केन्द्र अमरावती आन्ध्र प्रदेश के गुन्टूर जिले में 16^0 34′ उत्तरी अक्षांश तथा 80^0 21′ पूर्वी देशान्तर पर स्थित है।[39] वर्तमान अमरावती कृष्णा नदी के तट पर स्थित प्राचीन आन्ध्र की राजधानी धान्यकटक है। आन्ध्रवंशीय सातवाहन नरेश शातकर्णि ने सम्भवतः 180 ई0 पू0 में इस स्थान पर राजधानी स्थापित की थी।[40] सातवाहन नरेश ब्राह्मण होते हुए भी हीनयान बौद्ध मत के पोषक थे। उन्हीं के शासनकाल में अमरावती का प्रख्यात स्पूत बना था।[41] अमरावती स्तूप के शिलालेखों से इसके प्राचीन नाम धान्यकटक के विषय में जानकारी होती है। इस पर सातवाहन, इक्ष्वाकु तथा वाकाटक शासको के लेख हैं। इससे पता चलता है कि, यह स्तूप 13वीं शताब्दी तक सुरक्षित था।[42] यह स्तूप साँची और भरहुत के समान ही सुन्दर सरल और परमोत्कृष्ट है और संसार की मूर्तिकला में इसका विशिष्ट स्थान है।[43] यह स्तूप आकार में भरहुत से दुगना था। इसमें सातवाहन युग का वैभव मूर्तिमान हो उठा था।[44] आन्ध्रवंशी राजाओं के पश्चात यहाँ कई शताब्दियों तक इक्ष्वाकु वंशी शासकों का शासन रहा इन्होंने इस नगरी को छोड़कर विजयनगर (नागार्जुनीकोण्ड) को राजधानी बनाया।[45] इस स्तूप की खोज 1797 ई0 में कर्नल मैकेंजी द्वारा की गई। इसके अवशेष मद्रास, कलकत्ता और लन्दन संग्रहालयों में सुरक्षित हैं।[46] बौद्ध धर्म और सातवाहन नगरियों के सांस्कृतिक जीवन से सम्बन्धित दृश्य अमरावती के शिलापट्टों पर उत्कीर्ण किए गए।[47] अमरावती के लेखों में इस स्तूप को चेतिय या महाचेतिय कहा गया है।

" भगव तो महाचेतिय पदमले अपनो। धम्मथान दिव खम्भो पतिथावितो ।"[48]

यहाँ से मिले अभिलेखों में प्राचीनतम अभिलेख अशोक का है, जिसमें यह कहा गया है कि–

"परतं [1] अभि [स] [घ] खो लिखते [मे] नेर जनों बहनी ..... अनसुयंति
[1] से र छिजिति विजये ..... [पिच] ममेपि [पितत ता] "

अर्थात 'परलोक में महाफल वाला यह अभिषिक्त होने पर मेरे द्वारा लिखवाया गया है। जन बहुत अनुसोचन करते हैं। अतएवं मेरे द्वारा (धर्मपर्यायों का) अनुश्रवण किया जाता है। विजय में जनों का छेदन हो जाता है और मेरे साथ भी **[यही हुआ]**"[49] दूसरी शताब्दी ई0पू0 के दो लेखों में अमरावती का प्राचीन नाम धान्यकटक मिलता है। अतः इस स्तूप का नाम धम्म महाचेतिय' और 'कटक महाचेतिय' पड़ गया।[50] भारतीय स्तूपों में अमरवती के अलंकृत अण्ड को छोड़कर सर्वत्र स्तूप का अण्ड सादा या अनालंकृत हैं।[51] इस स्तूप के अवशेषों से पता चलता है कि, इस स्तूप का अण्ड 60′ ऊँचा तथा 168′ व्यास का रहा होगा। अण्ड के चारो ओर 11′ चौड़ा प्रदक्षिण पथ तथा इस प्रदक्षिण को घेरने वाली 13′ चौड़ी वेदिका थी। जिसे इस स्तूप का कुल व्यास 192′ रहा होगा।[52] अमरावती की तक्षण कला सर्वोत्तम है। इस स्तूप का अण्ड, वेदिका, तोरण आदि सभी भाग अलंकृत है।[53] अमरावती के स्तूप पट्टों में नागपट्ट, चक्रवर्ती पट्ट, गण, यक्ष, पुष्कर, स्रज, बेल बूटों आदि का अलंकरण मिलता है।[54] अमरावती के अलंकरण में माया देवी के स्पप्न का अंकन तीन दृश्यों में मिलता है ये तीनों दृश्य एक ही पट्ट पर उत्कीर्ण हैं। प्रथम दृश्य में बोधिसत्व तुषित स्वर्ग में बैठे हैं, द्वितीय दृश्य में एक रथ पर हाथी बैठा है तथा तीसरे दृश्य में माया देवी सोयी हैं।[55] अमरावती के एक गोलाकार फलक पर नागराजा और नागरानी स्तूप की पूजा करते हुए दिखलाए गए है।[56] भारत के स्तूपों में तक्षशिला, भरहुत, साँची तथा अमरावती ऐसे स्थल है, जहाँ बुद्ध स्वयं न जा सके और न उन स्थानों का सीधा धार्मिक महत्व नहीं था। परन्तु चौराहे पर होने के कारण तथा राजमार्ग की प्रधानता के कारण अशोक ने वहाँ स्तूप बनवाया।[57] दक्षिण भारत में बौद्ध केन्द्र का विकास सातवाहन युग से हो रहा था। यहाँ के गुफाएँ एवं स्तूप विश्व विख्यात हैं।[58] चौथी शती ई0 में गुप्त सम्राट समुद्रगुप्त ने सिंहल पर आक्रमण किया था, जिसका वर्णन प्रयाग प्रशस्ति में हुआ है। लंका से भारत का सम्पर्क ई0पू0 सदियों में हुआ। जिससे धर्म के साथ कला का भी विस्तार हुआ। वहाँ की तक्षण कला में अमरावती शैली का अनुकरण दृष्टिगोचर होता है।[59]

(2) नागार्जुनीकोण्डा :–

आंध्रप्रदेश के गुन्टूर जिले में 16^0 34′ उत्तरी अक्षांश तथा 79^0 14′ पूर्वी देशान्तर पर बौद्ध कला केन्द्र नागार्जुनीकोण्डा स्थित है।[60] हैदराबाद से 100 मील दक्षिण पूर्व की ओर स्थित यह बौद्ध स्थल दूसरी शती ई0 के प्रसिद्ध

39 देवला मिश्रा– वही पृ0 200
40 विजयेन्द्र कुमार माथुर– वही, पृ0 31–32
41 वही, पृ0 32
42 राज किशोर सिंह –वही ख पृ0 13
43 विजयेन्द्र कुमार माथुर– वही, पृ032
44 राज किशोर सिंह –वही, पृ0 13
45 विजयेन्द्र कुमार माथुर– वही, पृ032
46 पृथ्वी कुमार अग्रवाल–वही, पृ0 161
47 वासुदेव शरण अग्रवाल –वही पृ0 298
48 वासुदेव शरण अग्रवाल –वही पृ0 5
49 परमेश्वरी लाल गुप्त –वही पृ0 72–73
50 पृथ्वी कुमार अग्रवाल–वही, पृ0 163
51 वासुदेव उपाध्याय –वही, पृ0 15
52 पृथ्वी कुमार अग्रवाल–वही, पृ0 163
53 वासुदेव उपाध्याय –वही, पृ0 35
54 पृथ्वी कुमार अग्रवाल–वही, पृ0 167
55 वासुदेव उपाध्याय –वही, पृ0 40
56 वही, पृ0 53
57 वही, पृ0 77
58 वही, पृ0 133
59 वही, पृ0 325
60 देवला मिश्रा वही, पृ0 240

आचार्य नागार्जुन के नाम से विख्यात है।[61] प्रथम शती ई0 तथा इसके पूर्व इस स्थल का नाम श्री पर्वत था। जिसका उल्लेख महाभारत[62] में इस प्रकार होता है :–

'' श्री पर्वत मा साद्य नदी तीर मुपस्पृषंत''

श्रीमद् भागवत[63] महापुराण में इस स्थल को श्री शैल बताते हुए कहा गया है कि,

''देवगिरिर्ऋष्यम् कः श्री शैलोवैंकटो वरिधारो विन्ध्यः ''

गाथा सप्तशती के रचयिता प्रसिद्ध सातवाहन राजा हाल ने प्रथम शती ई0 में प्रसद्धि रासायनाचार्य नागार्जुन के लिए यहाँ एक विहार बनवा दिया था उनके यहाँ रहने से यह स्थल महायान बौद्ध धर्म का केन्द्र हो गया।[64] आन्ध्र प्रदेश के अनेक विहार पर्वतों से संलग्न थे। कोण्डा शब्द का प्रयोग पर्वत के लिए हुआ है।[65] सातवाहन के पश्चात इक्ष्वाकु शासक अपनी राजधानी इस स्थान पर ले आए और इसे विजयपुर या विजयपुरी नाम दिया।[66] इक्ष्वाकुओं के शासन काल में विजयपुर बहुत सुन्दर नगर था। कृष्णा नदी के तट पर चारो ओर पर्वत मालाओं से घिरा यह नगर दुर्मेध दुर्ग की भाँति सुरक्षित था। विजयपुर के आस्थान से नौ बौद्ध स्तूपों के खण्डहर उत्खनित किए गए जो इस नगर के प्राचीन गौरव और एश्वर्य के साक्षी हैं। आठवीं शती ई0 में शंकराचार्य के हिन्दू धर्म के पुनरुज्जीवन के लिए किए गए प्रयत्न से बौद्ध धर्म को बड़ा धक्का लगा और नागार्जुनीकोण्ड का महत्व घटने लगा।[67] नागार्जुनीकोण्डा को शंकराचार्य ने अपने प्रचार का मुख्य केन्द्र बनाया जिसका परिचायक पुष्पगिरि शंकर मठ है। अब यहाँ एक विशाल बाँध बनने के कारण सारा क्षेत्र जलमग्न हो गया है[68]। इस स्थल की खोज आर्कियोलाजिक सर्वे आफ इण्डिया की एपिग्राफिकल शाखा के ए0आर0 सारस्वत महोदय ने इसकी खोज 1926 ई0 में की।[69] भारतीय पुरातत्व सर्वेक्षण विभाग ने वर्ष 1954–55 में यहाँ पर उत्खनन कार्य करवाया और विहार स्पूत और मन्दिर बौद्ध देवी हरिति से सम्बन्धित है।[70] वर्ष 1960–61 ई0 में एच0 सरकार महोदय के दिशा निर्देशन में उत्खनन कार्य हुआ। इस उत्खनन दल को यहाँ से पुरा पाषाण काल के हैण्डेक्स तथा क्लीवर मिले।[71]

आन्ध्रप्रदेश में ई0पू0 सदियों में स्तूपों का निर्माण होता रहा। जिसके भग्नावशेष नागार्जुनी कोण्डा से मिले है। इसके अण्ड पर खुदे हुए स्तूप का आकार है जिससे मूल स्तूप की रूपरेखा का ज्ञान होता है।[72] नागार्जुन कोण्डा का महास्तूप इष्ट –कर्म से बनी अण्डाकार रचना जान पड़ता है। इसके ब्रह्म स्वरूप वपर शिलाओं का आच्छादन न चढ़ाकर ऊपर से नीचे तक मोटा सुधा लेप चढ़ाया गया था।[73] नागार्जुन कला में अमरावती कला ने पर्याप्त उन्नति की।[74] भूमि तल पर स्तूप का व्यास 106′ तथा इसकी ऊँचाई 70′ से 80′ के बीच रही होगी।[75]

इस प्रकार आन्ध्र प्रदेश के अमरावती नागार्जुनी कोण्डा बौद्ध स्थलों पर चर्चा करने के उपरान्त भारत वर्ष के प्रमुख बौद्ध स्थलों पर चर्चा समाप्त होती है। इसमें भारत के प्रमुख बौद्ध स्थलों पर संक्षिप्त चर्चा तथा वहाँ के स्मारकों का नामोल्लेख किया गया है।

[61] विजयेन्द्र कुमार माथुर– वही, पृ032
[62] महाभारत वन पर्व 85,11
[63] भागवत पुराण –5, 18, 16
[64] विजयेन्द्र कुमार माथुर– वही, पृ0 488
[65] वासुदेव उपाध्याय –वही, पृ0 12
[66] विजयेन्द्र कुमार माथुर– वही, पृ0 488
[67] वही, पृ0 488–89
[68] वही, पृ0 489
[69] एनुअल रिर्पो ऑर्कियोलाजिक सर्वे ऑफ इण्डिया– 1926–17, पृ0 156–61
[70] इण्डियन आर्कियोलॉजी –1954–55 , ए रिव्यू, पृ0 220
[71] वही, पृ0 1960–61, पृ01
[72] वासुदेव उपाध्याय –वही, पृ0 70
[73] पृथ्वी कुमार अग्रवाल–वही, पृ0 169
[74] वासुदेव उपाध्याय –वही, पृ0 74
[75] पृथ्वी कुमार अग्रवाल–वही, पृ0 169